



हिन्दी

अलंकार

Hindi by Navneet Sir



खोल दे पंख मेरे
कहता है परिंदा,
अभी और उड़ान बाकी है,
जमीन नहीं है मंजिल मेरी,
अभी पूरा आसमान बाकी है ।

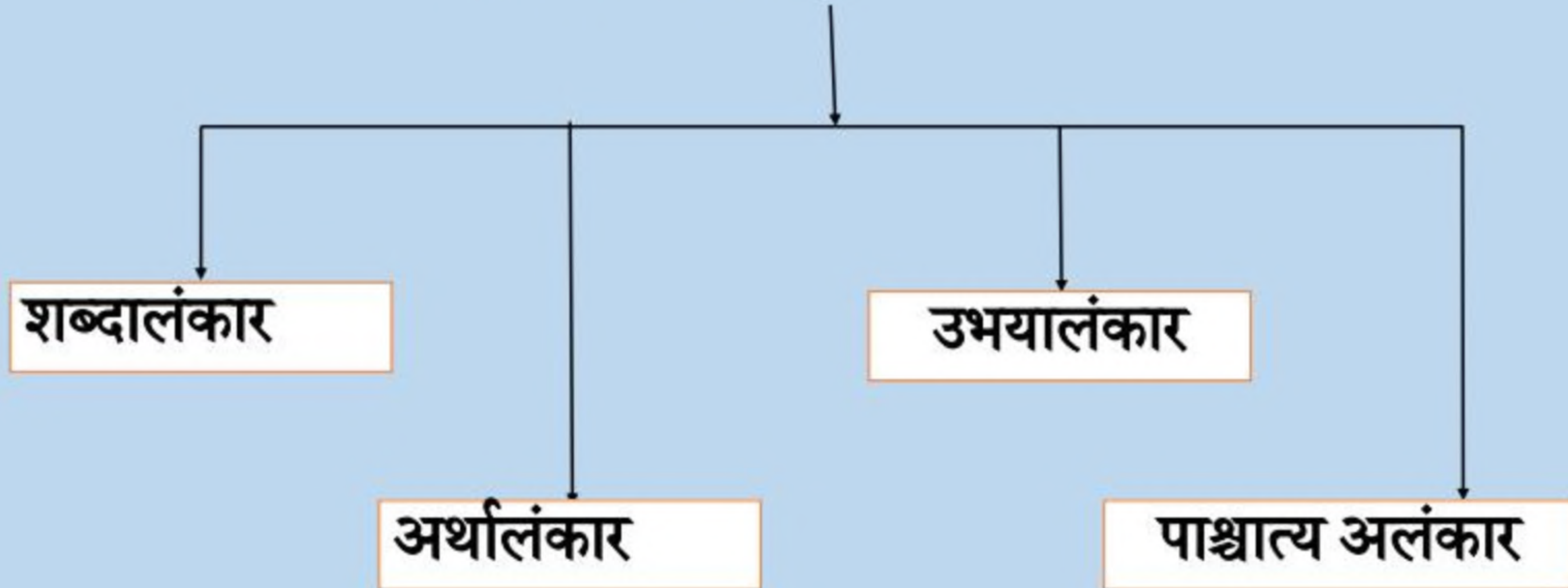


अलंकार

अलंकार ट्रिक

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के चार भेद





शब्दालंकार

शब्दालंकार वें अलंकार है, जहाँ शब्द विशेष के ऊपर अलंकार की निर्भरता हो। शब्दालंकार में शब्द विशेष के प्रयोग के कारण ही कोई चमत्कार उत्पन्न होता है, उन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों को रख देने पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता है।

जैसे-

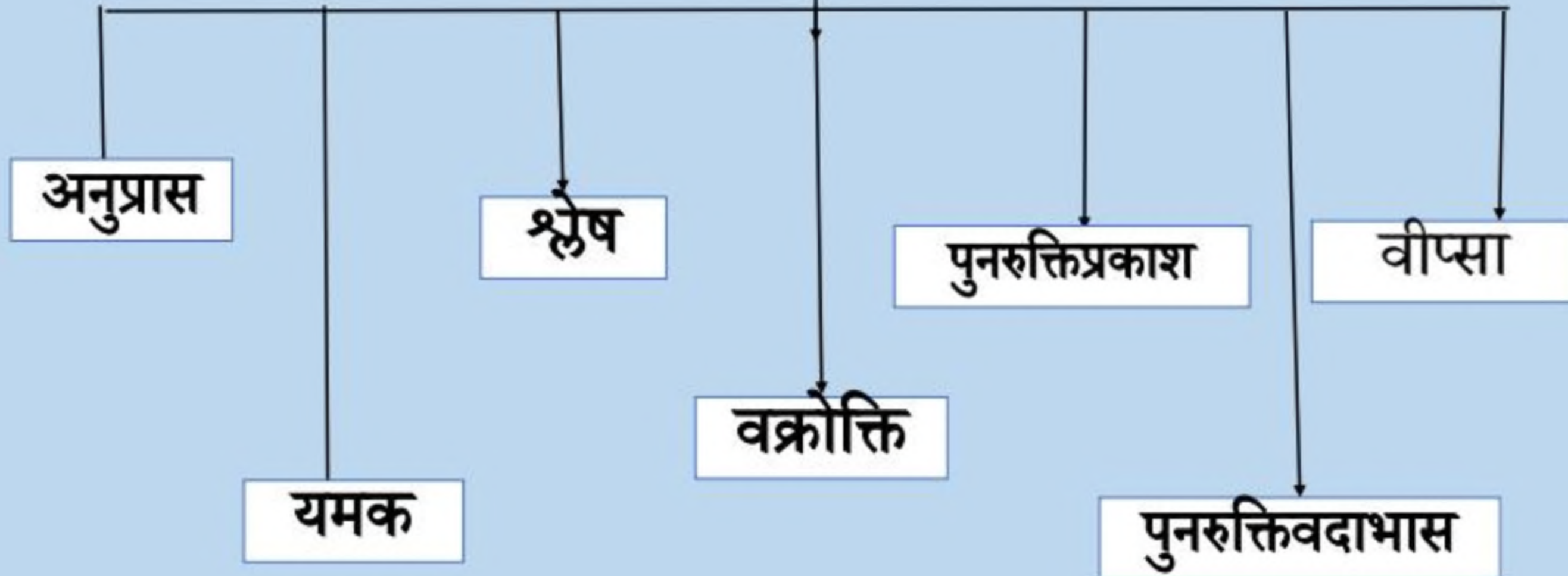
1. वह बाँसुरी की धुनि कानि परै, कुल-कानि हियो तजि भाजति है।
2. भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही



शब्दालंकार

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार मुख्य रूप से सात हैं





अनुप्रास अलंकार

जिस रचना में व्यंजनों की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमंत बुलाये॥

इस चौपाई में पूर्व में **म** की और उत्तर में **स** की तीन-तीन बार आवृत्ति हुई है, पर इनमें स्वरों का मेल नहीं है। कहीं-कहीं स्वर भी मिल जाते हैं;

जैसे -सो सुख सुजस सुलभ मोहिं स्वामी।

इसमें **स** की आवृत्ति पाँच बार हुई है, पर स्वरों का मेल (सुख, सुजस, सुलभ) केवल तीन बार हुआ है।

जैसे - 'सुरभित सुन्दर सुखद सुमन तुम पर खिलते हैं।'

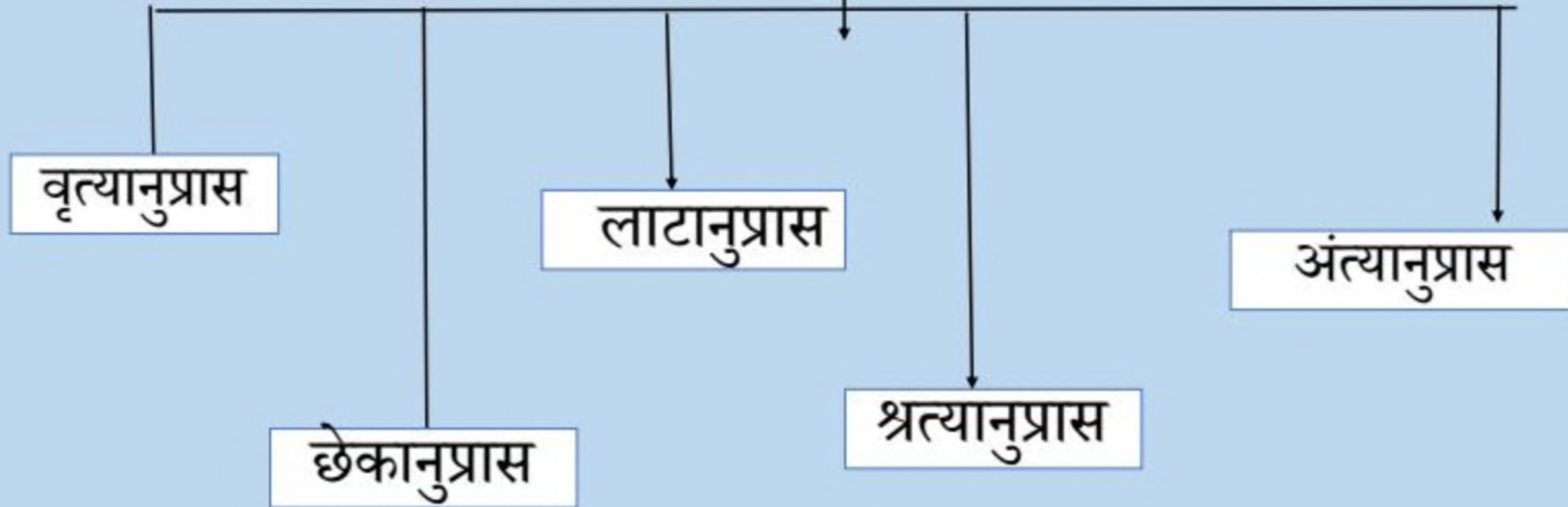
इस काव्य-पंक्ति में पास-पास प्रयुक्त 'सुरभित', 'सुन्दर', 'सुखद' और 'सुमन' शब्दों में **स** वर्ण की आवृत्ति हुई है।



शब्दालंकार

वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास अलंकार कहते हैं

अनुप्रास अलंकार





वृत्यानुप्रास

अनेक व्यंजनों की अनेक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ वृत्यनुप्रास होता है

एक व्यंजन की अनेक बार आवृत्ति के द्वारा-

सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा॥

एक स की अनेक बार आवृत्ति

बिधिनिषेधमय कलिमल हरनी। करम कथा रबिनन्दिनी बरनी।

यहाँ 'र' 'ब'

उस प्रमदा के अलकदाम से मादक सुरभि निकलती।

मद, दम, मद में अनेक व्यंजनों की अनेक बार



छेकानुप्रास

अनेक व्यंजनों की एक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति

छेक का अर्थ है वाक्-चातुर्य। अर्थात् वाक् से परिपूर्ण एक या एकाधिक वर्णों की आवृत्ति को छेकानुप्रास कहा जाता है।

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥

यहाँ अनेक व्यंजनों-'पद' 'पदुम' में प, द और 'सुरुचि' 'सरस' में स, र की स्वरूपतः और क्रमतः एक बार आवृत्ति है

इस करुणा कलित हृदय में, क्यों विकल रागिनी बजती है।

उपरोक्त पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति क्रम से एक बार है



लाटानुप्रास अलंकार:-

जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवृत्ति उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। यह यमक का ठीक उलटा है। इसमें मात्र शब्दों की आवृत्ति न होकर तात्पर्य मात्र के भेद से शब्द और अर्थ दोनों की आवृत्ति होती है

1. “रामभजन जो करत नहिं, भव- बंधन- भय ताहि।

रामभजन जो करत नहिं, भव-बंधन-भय ताहि॥”

1. पंकज तो पंकज, मृगांक भी है मृगांक री प्यारी।

मिली न तेरे मुख की उपमा देखी वसुधा सारी॥



श्रुत्यानुप्रास अलंकार:-

जहाँ कानो को मधुर लगने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है, मुख के उच्चारण स्थान से संबंधित विशिष्ट वर्णों के साम्य को श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण:-

1. "दिनांत था ,थे दीननाथ डुबते,
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।"
2. तेहि निसि में सीता पहुँ जाई
त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई॥



अन्त्यानुप्रास अलंकार:-

जहाँ अंत में तुक मिलती हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है। जहाँ पद के अंत के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की साम्यमूलक आवृत्ति हो

उदाहरण:-

1. “लगा दी किसने आकर आगा।
कहाँ था तू संशय के नाग?”
2. गुरु पद मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन॥



यमक अलंकार

एक शब्द फिर फिर परे, जहाँ
अनेकनबार ।
अर्थ और ही और हो, सोये यमक
अलंकार ॥

जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार होती है, परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं, वहाँ यमक अलंकार होता है। जहाँ शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, लेकिन उनके अर्थ सर्वथा भिन्न होते हैं

उदाहरण

तीन बेर खाती, वो अब तीन बेर खाती हैं।

“कनक-कनक से सो गुनी, मादकता अधिकाय,
वा खाय बौराय जग, या पाय बौराय॥”

य

से



यमक अलंकार



श्लेष अलंकार

श्लेष का अर्थ है 'चिपका हुआ'। इस अलंकार में प्रयुक्त शब्दविशेष में कई अर्थ रहते हैं। जब पंक्ति में एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है।
रावन सिर सरोज बनचारी चलि रघुवीर सिलीमुख धारी।

(सिलीमुख' के अर्थ-बाण, भ्रमर)

सुबरन को ढूँढ़त फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर। ('सुबरन' के अर्थ-सुन्दर वर्ण, सुन्दर स्त्री और सोना।)

पी तुम्हारी मुख बास तरंग

आज बौरे भौरे सहकार।

(बौर-भौर के प्रसंग में मस्त होना आम के प्रसंग में-मंजरी निकलना)

श

से



श्लेष

अलंकार



वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ किसी बात पर वक्ता और श्रोता की किसी उक्ति के सम्बन्ध में, अर्थ कल्पना में भिन्नता का आभास हो, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। जिस शब्द से कहने वाले व्यक्ति के कथन का अभिप्रेत अर्थ ग्रहण न कर श्रोता अन्य ही कल्पित या चमत्कारपूर्ण अर्थ लगाये और उसका उत्तर दे, उसे वक्रोक्ति कहते हैं।

एक कबूतर देख हाथ में पूछा, कहाँ अपर है ?

उसने कहा, अपर कैसा ? वह तो उड़ गया सपर है॥

उ

से



उपमा अलंकार



अर्थालंकार-

काव्य में जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

उपमा अलंकार- उप + मा = उपमा

यहाँ उप का आशय है समीप और मा का आशय है मापना। अर्थात् समीप रखपर मिलान करना या समानता बतलाना। जब किसी वस्तु का वर्णन करते हुए उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी तुलना करते हैं, तब उपमा अलंकार होता है।
उपमा के चार अंग होते हैं-

1. **उसमेय-** जिस व्यक्ति या वस्तु की समानता की जाती है।
2. **उपमान-** जिस व्यक्ति या वस्तु से समानता की जाती है।
3. **साधारण धर्म-** वह गुण/धर्म जिसकी तुलना की जाती है।
4. **वाचक शब्द-** वह शब्द जो रूप, रंग, गुण और धर्म की समानता दर्शाता है।
यथा- सा, सी, सम, समान आदि।



उदाहरण-

1. सिन्धु-सा विस्तृत और अथाह,
एक निर्वाचित का उत्साह।

✓ 2. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।

प्रस्तुत उदाहरण में,

उपमेय- बच्ची, उपमान- फूल,

साधारण धर्म- कोमल, वाचक शब्द- सी

✓ 3. पीपर पात सरिस मन डोला।



रूपक अलंकार-

काव्य में जहाँ उपमेय पर उपमान का आरोप या उपमेय और उपमान का अभेद ही रूपक अलंकार है। इसमें वाचक शब्द का लोप होता है। ✓

उदाहरण- 1. उदित उदयगिरि-मंच पर, रघुबर-बाल पतंगा।

बिकसे संत-सरोज सब, हरसे लोचन-भृंगा।

कम

उपर्युक्त उदाहरण में उपमेय और उपमान का आरोप-

1. उदयगिरि पर मंच का,
रघुबर पर बाल-पतंग का,
संतों पर-सरोज का,
लोचनों पर भृंग (भौरों) का।

र

से



रूपक अलंकार



उत्प्रेक्षा अलंकार-

उत्प्रेक्षा का अर्थ है- किसी वस्तु को सम्मानित रूप में देखना।

काव्य में जहाँ उपमेय में कल्पित उपमान की संभावना व्यक्त की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

इसके वाचक शब्द- जनु, जानी, मनो, मानो, मनहु, ज्यों, जानो, मानहुँ, मनु आदि।

उदाहरण- 1. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गाता।

मनहुँ नील मणि सैल पर, आतप पर्यो प्रभाता।

2. पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से।

मानों झूम रहें हैं तरु भी, मंद पवन के झोंके से।



अतिशयोक्ति अलंकार-

जहाँ लोकसीमा का अतिक्रमण करके किसी विषय वस्तु या विषय का वर्णन बढ़ा-चढ़ा कर किया जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण-

1. पड़ी अचानक नदिया अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।

राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार। ✓

2. देख लो साकेत नगरी है यही

स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।



राह संघर्ष की जो चलता है; वो ही
संसार को बदलता है। जिसने रातों से
जंग जीती, सूर्य बनकर वहीं निकलता
है।

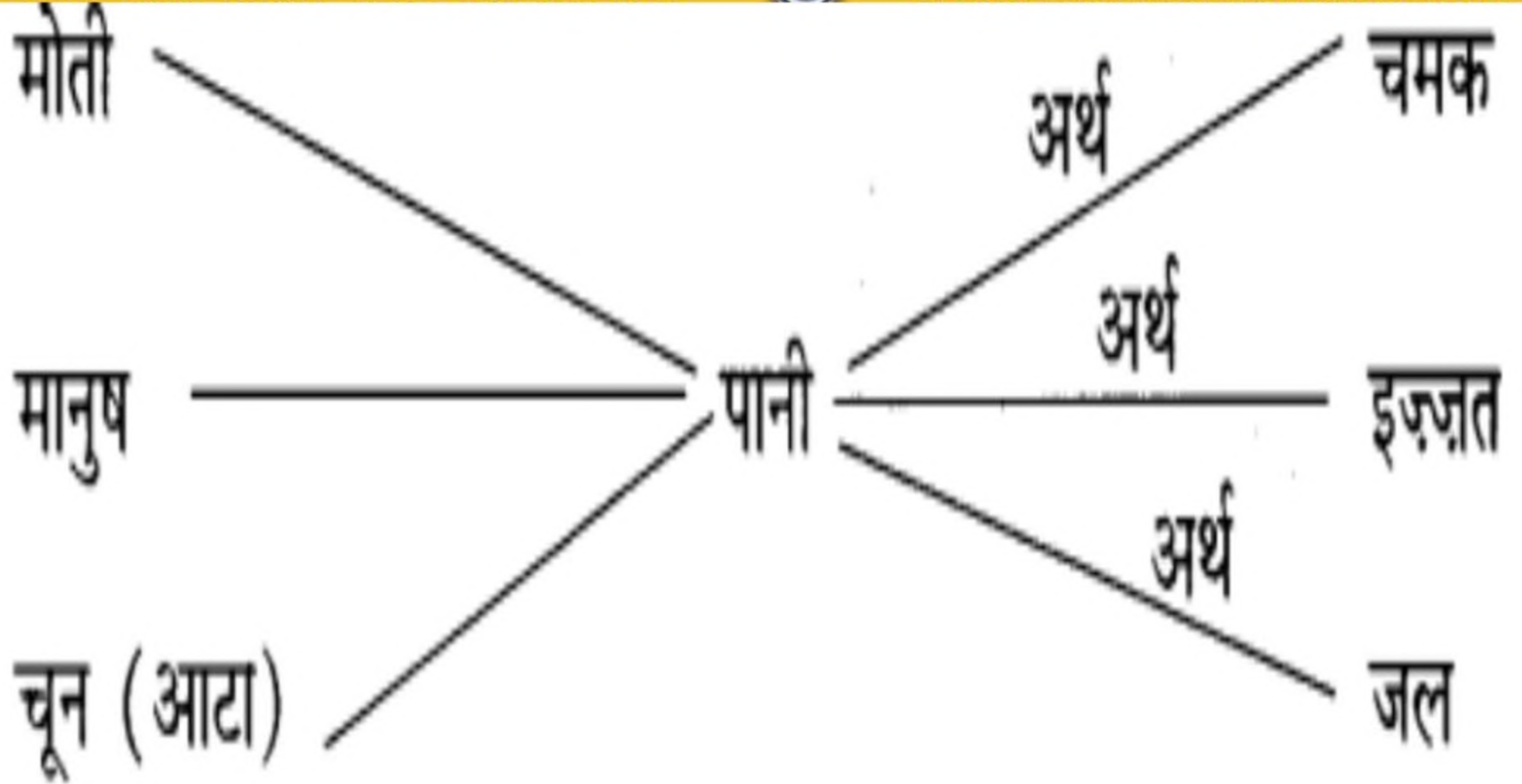


अन्योक्ति अलंकार-

जहाँ प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अर्थ ध्वनित हो, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। अर्थात् जहाँ किसी बात को सीधे या प्रत्यक्ष न कहकर अप्रत्यक्ष रूप से कहते हैं, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण-

1. माली आवत देखकर, कलियन करी पुकारि।
फूले-फूले चुन लिए, काल्हि हमारी बारि।
2. जिस दिन देखे वे कुसुम, गई सो बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार।





अ

से



अतिशयोक्ति अलंकार



श्लेष वक्रोक्ति अलंकार क्या है

:- जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाये वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे :- को तुम हो इत आये कहाँ घनस्याम हो तौ कितहूँ बरसो।

चितचोर कहावत है हम तौ तहां जाहुं जहाँ धन सरसों॥



श्लेष अलंकार क्या होता है :-

जहाँ पर कोई एक शब्द एक ही बार आये पर उसके अर्थ
अलग अलग निकलें वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है।

जैसे :- रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सूना।
पानी गए न उबरै मोती मानस चून॥



अर्थ – जिसमें रहीम जी ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है जिसमें पानी का पहला अर्थ आदमी या मनुष्य के संदर्भ में है जिसका मतलब विनम्रता से है क्योंकि मनुष्य में हमेशा विनम्रता होनी चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ चमक या तेज से है जिसके बिना मोतियों का कोई मूल्य नहीं होता है। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे को गूथने या जोड़ने में दिखाया गया है क्योंकि पानी के बिना आटे का अस्तित्व नम्र नहीं हो सकता है और मोती का मूल्य उसकी चमक के बिना नहीं हो सकता है उसी तरह से मनुष्य को भी अपने व्यवहार को हमेशा पानी की ही भांति विनम्र रखना चाहिए जिसके बिना उसका मूल्यहास होता है।



संदेह अलंकार

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं। जब यह दुविधा बनती है, तब संदेह अलंकार होता है अर्थात् जहाँ पर किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे वहाँ संदेह अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।



जैसे :- यह काया है या शेष उसी की छाया.
क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया।



संदेह अलंकार की मुख्य बातें :-

1. विषय का अनिश्चित ज्ञान।

2. यह अनिश्चित समानता पर निर्भर हो। ✓

3. अनिश्चय का चमत्कारपूर्ण वर्णन हो। ✓



जब उपमेय में उपमान का संशय हो तब संदेह अलंकार होता है। या जहाँ रूप, रंग या गुण की समानता के कारण किसी वस्तु को देखकर यह निश्चित न हो कि वही वस्तु है और यह संदेह अंत तक बना रहता है, वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

उदाहरण-

कहूँ मानवी यदि मैं तुमको तो ऐसा संकोच कहाँ?

कहूँ दानवी तो उसमें है यह लावण्य की लोच कहाँ?

वन देवी समझूँ तो वह तो होती है भोली-भाली॥



विरह है या वरदान है। ✓

सारी बिच नारी है कि नारी बिच सारी है।

कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।

कहहिं सप्रेम एक-एक पाहीं।

राम-लखन सखि होहिं की नाहीं॥ ✓✓



अतिशयोक्ति अलंकार-

काव्य में जहाँ किसी बात को बढ़ा चढ़ा के कहा जाए, वहाँ

अतिशयोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण-

हनुमान की पूँछ में, लगन न पायी आग।

लंका सगरी जल गई, गए निशाचर भाग॥

आगे नदिया पड़ी अपार, घोडा कैसे उतरे पार।

राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार॥



देखि सुदामा की दीन दसा,

करुना करिकै करणानिधि रोए।

पानी परात को हाथ छुयौ नहिं,

नैनन के जल सों पग धोए।

जनु अशोक अंगार दीन्ह मुद्रिका डारि तब।

मनो झूम रहे हैं तरु भी मंद पवन के झोकों से।

**विभावना अलंकार :-**

जहाँ कारण के न होते हुए भी कार्य का होना पाया जाय , वहाँ
विभावना अलंकार होता है ।

जैसे-

बिनु ^{पैर} पग चलै सुनै बिनु काना॥

कर बिनु करम करै विधि नाना॥

आनन रहित सकल रस भोगी ।

बिनु बान बकता बड़ जोगी॥



स्पष्टीकरण – उपर्युक्त उदाहरण में कारण न होते हुए भी कार्य का होना बताया जा रहा है। बिना पैर के चलना, बिना कान के सुनना, बिना हाथ के नाना कर्म करना, बिना मुख के सभी रसों का भोग करना और बिना वाणी के वक्ता होना कहा गया है। अतः यहाँ विभावना अलंकार है।

बिना
रहित
विहीन

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छबाय।
बिन पानी साबुन निरमल करे स्वभाव॥



बंदउँ गुरुपद पदुम- परागा। ✓

सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।।

चरण सरोज पखारन लागा ।

“उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बाल-पतंगा।

बिकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन-भृंगा।।”

“बीती विभावरी जाग री।

अम्बर-पनघट में डूबो रही तारा-घट उषा नागरी।।”



मानवीकरण अलंकार

जब काव्य में प्रकृति को मानव के समान चेतन समझकर उसका वर्णन किया जाता है, तब मानवीकरण अलंकार होता है

जैसे -

1 है विखेर देती वसुंधरा मोती सबके सोने पर
रवि बटोर लेता उसे सदा सबेरा होने पर।



उषा सुनहले तीर बरसाती
जय लक्ष्मी- सी उदित हई
3. केशर -के केश- कलौ से छूटे ।
4. दिवस अवसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
वह संध्या-सुन्दरी सी परी धीरे-धीरे।

**Therapeutic
Diet**